IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

बिम्बों के कवि : शमशेर

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य
वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महोबा उ0 प्र0
truthonly88@gmail.com

'शमशेर बहादुर सिंह' की कविताओं पर कुछ लिखने के पहले सोचना बहुत पड़ता है लेकिन हाँ इसी सोचने के क्रम में शमशेर पर्त दर पर्त (प्याज के छिलके की तरह) हमारे सामने आने लगते हैं, फिर सारा अर्थ 'बात बोलेगी हम नहीं' के आधार पर खुल जाता है। शमशेर की कविताएँ छोटी हैं लेकिन तीक्ष्ण, गद्यात्मक लगती हैं लेकिन रसात्मक हैं। सपाट लगती हैं लेकिन अर्थवान हैं, कठिन लगती हैं लेकिन सहज हैं। सपाट, कठिन, गद्यात्मक आदि सिर्फ लगती हैं लेकिन वैसी हैं नहीं। शमशेर की पूरी कविताएँ बिम्ब धर्मी होती हैं। अध्ययन मेरा सीमित है, इसलिए हो सकता है कि कुछ सरलीकरण कर बैठूं वैसे मैने जितनी भी शमशेर की कविताएँ पढ़ी हैं सबमें कहीं न कहीं विम्ब जरूर है। बिम्ब की चर्चा किए बगैर शमशेर पूरे नहीं हो सकते। अकारण नहीं है डॉ० गोविन्द प्रसाद शमशेर को 'बिम्बों का कवि' कहते हैं।